International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भक्ति आन्दोलन में अनुवाद की भूमिका

डॉ रम्या बालन के

सहायक प्राध्यापक
एस एन कॉलज, कण्णूर, केरल

शोधसार
भारते के इतिहास में भक्ति आनदोलन का महत्वपूर्ण भूमिका है । राजा महाराजाओं , विदेशी आक्रमण से पीडित जनता के पास भक्ति मुक्ति का रास्ता बनकर आया । बौद्ध धर्म का पतन वैष्णव शैव परंपरा को पनपने का मौका बना । भक्ति केवल ईश्वर प्राप्ति का मार्ग ही नहीं बल्कि सामाजिक सुधार का औजार के रूप में सामने आया । संस्कृत में रचाहुआ कई भक्ति काव्यों को कवियों ने अपने क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद किया । क्योंकि उस समय संसकृत साधारण जनता के लिए अप्राप्य भाषा थी । इस प्रपत्र में भक्ति आन्दोलन में अनुवाद की भूमिका के बारे में हम चर्चा करेंगे । विशेषत: केरल क्षेत्र के भक्ति आन्दोलन का अध्ययन होगा । ।संसकृत , तमिल और मलयालम भाषा के बीच अनुवाद प्रक्रिया उस समय बहुत जोर से चल रहा था । भाषायी सीमा को तोडकर अनुवाद की ये सांसकृतिक सेतु सबको एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया ।

कुंजी शब्द –इतिहास, संस्कृति, भक्ति, साहित्य

मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण घटना है । जैसे गुप्तकाल को भारत का सुवर्ण युग कहा जाता है उसी प्रकार भारत के साहित्योतिहास में भक्ति आन्दोलन सुवर्णकाल ही था । "ग्रियर्सन, रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी भक्ति के उदय की व्याख्या तीन भिन्न रूपों में करते हैं । ग्रियर्सन के लिए वह एक बाह्य प्रभाव है, रामचन्द्र शुक्ल के लिए वह बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है, और हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे महज भारतीय परंपरा का अपना स्वत: सफूर्त विकास मानते है"[i]**भक्ति** शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'सेवा करना' या 'भजना' है, अर्थात् श्रद्धा और प्रेमपूर्वक इष्ट देवता के प्रति आसक्ति। व्यास ने पूजा विधि के संदर्भ में अनुराग को भक्ति कहा है। भारतीय धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर भक्ति का उदय वैदिक काल से ही दिखाई पड़ता है। ऋग्वेद काल के पहले से ही भक्ति को परिभाषित करने का प्रयास हुआ था । भक्ति को एक सिद्धांत का रुप देने का प्रयास भगवत् गीता में ही हुआ । इसी प्रकार नारद सूक्त और शांडिल्य सूक्त में भी इसका प्रतिपादन मिलता है। नारद सूक्त में भक्ति की परिभाषा इस प्रकार दिया गया है –"सा तस्मिन परम प्रेम रुपा:"[ii]अर्थात भक्ति ईश्वर के प्रति अपार प्रेम है । इसके बाद श्री शंकराचार्य और इसी प्रकार के कई आचार्यों ने भी भक्ति को परिभाषित करने का प्रयास किया था । भक्ति कीविशेषता और महत्ता के बारे में श्री शंकराचार्य ने विवेक चूडामणी में बताया है कि –"मोक्ष कारण सामग्रयाम् भक्ति रेवगरीयसी, स्वस्वरूपानुसन्धानाम् भक्तिरित्यभिधीयते ।"[iii] अर्थात मोक्ष साधना में सबसे श्रेष्ठ सथान भक्ति को ही दिया जाता है । माध्वाचार्य के राय में ज्ञान और भक्ति एक ही है । माध्वाचर्य के यही संकल्प बाद में भक्ति आन्दोलन को नया मोड दिया 6 वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन की शुरुआत हुआ फिर वह पूरे भारत में अपना प्रभाव छोडा । इसके बारे में प्रसिद्ध उक्ति है वह इस प्रकार है

"उत्पन्ना द्रविडे भकित
वृद्धिम् कर्णाडके गता

क्वचित् क्वचिन महाराष्ट्रे

गुर्जरे प्रलयम गता"[iv]

अर्थात भक्ति आन्दोलन का आरंभ दक्षिण भारत में होता है उसके बाद कर्णाडक में विकास हुआ महाराष्ट्र में पूरा विजय पाकर गुजरात में विलीन हो गया । बौद्ध धर्म के अपचय के कारण ही भारत में भक्ति आन्दोलन को पल्लवित होने का मौका मिला । मौज मस्ति में जीवन बिताने वाले बौद्ध सन्यासियों को देखकर जानताओं को बौद्ध धर्म में बिलकुल आस्था नहीं रहा । इसी समय शैव और वैष्वव सम्प्रदाय का उदय होता है । श्री शंकराचार्य का उदय भी इसी समय हुआ। सनातन धर्म को पूरे भारत में प्रचार प्रसार करने का श्रेय शंकराचार्य को है।श्रीशंकाराचार्य केरल में जन्म होने पर भी उनका साहित्यिक माध्यम संस्कृत था । कहा जाता है कि शंकराचार्य के सिद्धान्त और साहित्य साधारण जनता के लिए नहीं था । लेकिन उनके सारे गीत बाद में मलयालम में लिखे गये कीर्तनों का आधार बना जो बाद में बहुत लोकप्रिय बना ।कन्नड में पौराणिक ग्रंन्थों को वैष्णवों ने समाहित किया था । संसकृत में लिखी गयी भागवत् पुराण को 16 वी शती में ही कन्नड में अनुवाद किया था । इसी प्रकार धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद ने 16 वी शती में ही संसकृत से पारसी में किया था । इस प्रकार भक्ति आन्दोलन को वैश्विक मान प्राप्त हुआ। अश्वघोष कृत वज्रसूची का संस्कृत से मराठी का अनुवाद पूरेमध्य भात में शोच मचाया था ।

केरल के भक्ति आन्दोलन में अनुवाद की भूमिका

केरल के भक्ति आन्दोलन का समयसातवीं- दसवीं शताब्दी के बीच में होता है ।केरल में तेरहवीं शताब्दी के अंत में जीवित विल्वमंगलम स्वामियार के 'श्रीकृष्णमृत' को केरल के पहला भक्ति काव्य माना जाता है इसमें बालकृष्ण के बालक्रीडाओं का वर्णन किया है ।वर्ण व्यवास्था को लाँघकर इस समय के भक्त कवियों ने ईश्वर प्राप्ति के लिए अलग दुनिया बनाया । वहाँ धर्म -जाति किसी भी प्रकार का बाधा नहीं बना । पूरे भारत में इस्लाम, ईसाई धर्म के समांतर हिन्दु धर्म भी अपने सिद्धान्तों को लेकर बिना कोई अडचन से आगे बढ रहे थे । केरल के भक्ति आन्दोलन के पीछे कोई ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग , योग मार्ग हठयोग जैसा कुछ भी नहीं था वहाँ केवल ईश्वर प्रेम ही सब कुछ था । इसी के आधार पर केरल में भक्ति का प्रचार प्रसार हुआ । चेरुश्शेरी नम्बूतिरी.(AD 1375-1475) काकृष्णगाथा, पून्तानमनम्बूतिरी कृत(1547-1640) ज्ञानप्पाना, मेलप्पत्तूर नारायणभट्टतिरी कृत नारायणीयम. एषुत्तच्चन के अध्यात्म रामायणम् आदि केरल के प्रसिद्ध भक्ति काव्य है । राजा महराजाओं से एवं विदेशी अक्रमण से पीडित जनताओं के सामने भक्ति इन सबसे बचने का मार्ग बनकर सामने आया । भक्ति काव्य केवल ईश्वर को साधने का मार्ग ही नहीं कुंजन नम्बियार, कबीरदास, तुकाराम जैसे भक्त कवियों ने जाति प्रथा एवं तत्कालीन समाज में प्रचलित सारे अन्यायों के खिलाफ आवाज़ उठाने का माध्यम भी बनाया ।

केरल में एषुत्तच्चन के अध्यात्म रामायण का काफी प्रभाव रहा । एषुत्तच्चन के पहले चौदहवीं शताब्दी में निरणम् कवि और चीरामन कवियों ने रामायण का मलयालम में अनुवाद किया । लेकिन उस रामायण में तमिल भाषा का बाहुल्य था । एषुत्तच्चन ने रामायण को तमिल से मुक्त करके मलयाम और संस्कृत के निकट लाया । 16 वीं शताब्दी में जीवित तुंजत्त रामानुजन एषुत्तच्चन ने साहित्य और भाषा को साधारण जनता के करीब लाया । ब्राह्मण समाज ने उस समय भाषा और साहित्य पर कब्जा कर लिया था । संस्कृत में लिखे गये ग्रन्थ तो सामान्य जन छू भी नहीं सकते थे । जातिप्रथा के सबसे भयानक दिन थे । उसी समय शूद्र जाति में जन्मा एषुत्तच्चन ने संसकृत सीखकर अध्यात्म रामायण का रचना किया । मलयालम भाषा में रचित अध्यात्म रामायण ने पूरे केरल में अपना प्रभाव दिखाया । एषुत्तच्चन का राम वल्मीकि रामायण के राम से बिलकुल अलग राम थे । विष्णु के अवतार के रूप में ही एषुत्तच्चन राम को दिखाया ।

वाल्मीकि रामायण का पहला स्वतंत्र अनुवाद चीरामन कवि का रामचरित है ।इसकी भाषा तमिल और संस्कृत का मिश्रित रूप है ।चीरामन कवि ने वाल्मीकि का रामायण एवं तमिल के कम्ब रामायण को आधार बनाकर रामचरितम की रचना की है । ये पद्य के रूप में रचा गया है ।इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर लिखी गयी रचना है रामकथा पाट्टु । साधारण लोगों को समझनेवाली लोक भाषा में ये लिखा गया है ।इसे भी स्वतंत्र अनुवाद के रूप में मान सकते है । ।

भक्ति काव्यों के अनुवाद में निरणम कवियों का महत्वपूर्ण स्थान है । माधवप्पणिक्कर, शंकरप्पणिक्कर, रामप्पणिक्कर ।ये तीनों केरल के निरणम नामक जगह में पैदा हुआ,इसीलिए इन्हें निरणम कवि कहते हैं । उन्होंने चीरामन रचित 'रामचरित' का अनुवाद मलयालम भाषा में किया । क्योंकि चीरामन के रामचरित में मलयालम से अधिक तमिल का बाहुल्य था । निरणम कवियों ने तत्कालीन साहित्य में प्रचलित काव्य सिद्धान्तों को तोडकर संस्कृत के कुछ शब्दों को लेकर मलयालम में उसका अनुवाद किया । इन कवियों का समय 1350-1450 तक है । इसमें माध्वप्पणिक्कर ने भगवत् गीता का अनुवाद किया । मलयालम भाषा के पिता एषुत्तच्चन इन्हीं कवियों को अपने मार्गदर्शक मानते है ।इसी प्रकार शंकरप्पणिक्कर 'भारतमाला' एवं रामप्पणिक्कर 'रामायण भारत' का अनुवाद किया है । ये सारी रचनाएँ पौराणिक कथाओं के अनुसार रचा गया है ।निरणम् कवियों को 'कण्णश कवि' भी कहा जाता है इसी के अनुसार उनके द्वारा लिखा गया रामायण को 'कण्णश रामायण' भी कहा जाता है । निरणम कवियों ने तमिल और मलयालम का उपयोग किया तो एषुत्तच्चन ने मलयालम और संस्कृत का प्रयोग किया है । उत्तर भारत में लोग राम को परम ईश्वर मानकर उनकी पूजा कर रहे तो केरल में कृषण भक्ति का प्रचार था । आज भी केरल में आपको राम मंदिर बहुत कम दिखेंगे । केरल के भक्ति आन्दोलन में कृष्ण भक्ति का ही ज्यादा प्रभाव रहा ।

निष्कर्ष

भक्ति को एक आन्दोलन के रूप में परिवर्तित करने में अनुवादअहम भूमिका निभाया है। विश्व को एक सूत्र में बाँधने का काम अनुवाद द्वारा संभव होता है । भक्तिकाल के संदर्भ में रामायण और महाभारत का अनुवाद ऐतिहासिक महत्व रखता है । बिजय कुमार दास के 'ए हान्ड बुक ऑफ ट्रेन्सिलेषन स्टडीज़' में कहा गया है कि – "*The Ramayana and The Mahabharata have been translated into almost all regional languages of India. That helped,the creation of Pan-Indianethos*"।[v] इसी प्रकार भक्त कवियों ने तत्कालीन समय में प्रचलित धर्मिक बाह्याडम्बर का विरोध करके सामाजिक सुधार लाने के लिए भक्ति को एक माध्यम बनाया । भक्ति आन्दोलन ने भाषायी सीमा को तोडकर भारत को एकसाथ लाया ।

[i] □□□□□ □□□□□ □□□□□□ – □□□□□□□□□ □□□□□□□□□ – □□-12
[ii]□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□□ – □□-3
[iii]□□□ □□-7
[iv]□□□ □□-10
[v]A hand book of Translation studies- bijaykumar Das-□□-84